INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.428 (SJIF 2026)

नारी शिक्षा एक ऐतिहासिक अध्ययन

(Women's Education: A Historical Study)

डॉ. खुशबू कुमारी
सहायक प्राध्यापक,
इतिहास विभाग,
भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय,
मधेपुरा (बिहार, भारत)
E-mail: khushbooyadav99252@gmail.com

DOI No. 03.2021-11278686 DOI Link :: https://doi-ds.org/doilink/04.2026-23798813/IRJHIS2604029

प्रस्तावना :

भारतीय चिंतन में नारियों को सदैव सम्मान मिला है। उन्हें शक्ति स्वरूपा, करुणामयी, एवं पूजनीय माना गया है। इतिहास के कुछ कालखंडो को छोड़कर सदैव ही नारी सम्मान शिक्षा एवं संस्कार को विशेष महत्व प्रदान किया गया है। वैदिक काल में सर्व ज्ञात है कि नारीयाँ विदुषी हुआ करती थी, वे अपनी विद्वता, तर्क शक्ति,, वाक्य शक्ति के लिए जानी जाती थी।

ऋग्वैदिक एवं उपनिषद काल में नारी शिक्षा का विकास अपने चरम पर था । उच्च शैक्षणिक संस्थाओं में पुरुषों के भांति महिला भी शिक्षा ग्रहण किया करती थी। लेकिन इसकी संख्या काफी सिमित हुआ करती थी।

उत्तररामचरित मे आत्रेयी ने वाल्मीकी के आश्रम में शिक्षा प्राप्त की थी ।इसी प्रकार का एक उदारण मालतीमाधव में ज्ञात होता है जिससे कामन्दकी के गुरुकुल में अध्ययन का उल्लेख किया गया है। व्याकरणाआचार्य पाणिनि ने अपने उद्दरण में नारियों द्वारा वेद अध्ययन की चर्चा की है। विश्वभारा अपाला, धोषा, लोपामुद्रा, मैत्रेयी रत्नावली , गार्गी ,कात्यानी, इंद्राणी का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

विदुषियो ने कई महत्वपूर्ण ऋचाओं की रचना की है। शास्त्रार्थ करने वाली नारियों में माँ भारती का नाम विशेष उल्लेखनीय रहा है। मिथलांचल की गरिमामयी धरती को गौरवान्वित करने में महत्वपूर्ण योगदान है। माँ भारती असाधारण विदुषी–एवं सर्वोच्च दार्शनिक भी जिन्हे वेद वेदांत मीमांसा का महत्वपूर्ण ज्ञान था।

शंकराचार्य एवं मंडन मिश्र के मध्य होने वाले शास्त्रार्थ का वो निर्णायक रही। इस शास्त्रार्थ में अंततः शंकराचार्य विजय हुई किन्तु माता ने अपनी तर्क शकि का परिचय देते है उनके समक्ष अपना विचार रखते हुये कहा कि आप अभी सिर्फ आधे शरीर से विजयी हुये हैं क्योंकि अर्धांगिनी होने के कारण अपको मुझे शास्त्रार्थ में पराजित करना पडेगा। शंकराचार्य के ब्रह्मचारी होने के कारण वे कामशास्त्र सम्बन्धी प्रश्न के उत्तर देने तत्काल असमर्थ रहे। भारती का व्यवित्व भारतीय इतिहास में महिलाओं को विद्वता और बौद्धिक शक्ति का एक अतुलनीय उदाहरण है। याज्ञवल्क्य एंव गार्गी दार्शनिक विमर्श यह प्रदर्शित करता है कि नारी ज्ञान के क्षेत्र में कितनी अग्रणी रही है। जिन्होंने उनके तात्वकि प्रश्न हो ब्राह्म संबंधी प्रश्न सभी उनकी असीम विद्वता को दर्शाते हैं।

ब्रह्मवादिनी नारी अध्यापन कार्य द्वारा उच्च शिक्षा में अपना योगदान करती है । महिला शक्ति के लिए ''शक्तिकी ''शब्द का प्रयोग किया गया गया है जिसका आशय 'भाला धारण करनेवाली शक्ति स्वरुपा है, जो अपनी असीम शक्ति और अदम्य साहस का परिचायक है जिससे यह ज्ञात होता है कि नारियों को सैनिक शिक्षा प्रदान किया जाता था। और वह अपने रक्षण के साथ परिवार एंव राज्य रक्षण में अपना सहयोग प्रदान करती थी। ज्ञात होता है कि के दरबार में प्रशिक्षित महिला से रहती थी।

ज्ञातव्य है कि ऋग्वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति अध्ययन अध्यापन क्षेत्र में बहुत अच्छी थी। किंतु उतरवैदिक काल से महिलाओं की स्थिति में गिरावट प्रारंभ हो गया। ऋगवेद में 10ध्40ध्2 में देवर से पुनर्विवाह का प्रमाण मिलता है। वेदों में बुद्धिमती एव तेजस्वी यशस्वीनी पुत्री की कामना की गई है। साथ ही कन्यादान का अपना विशेष महत्व दर्शाया गया है। वेदों में "दहेज'' का वास्तविक अर्थ भी बतलाया गया है। जिसके अनुसार कन्या का पिता ज्ञान , विद्या एवं उत्तम संस्कार आदि से सम्पन्न वधु वर को मेंट करें ।निश्चित रूप से जो समाज – परिवार के कल्याण के लिए अति आवश्य हो क्योकि, एक शिक्षित एवं ज्ञानस्वरूपा स्त्री अपने परिवार, समाज के साथ–साथ एक है सशक्त राष्ट्र की नींव तैयार करती है । स्त्रियां वेदों में कला कौशल विदुषी सशक्त शासन प्रशासक एवं वीर योद्धा के रूप में वर्णित है। क

वेदों में नारियों का गौरवमयी चित्रण प्रस्तुत किया गया है। वेदों में नारियों को ब्रह्मा कहा गया है, ब्रह्मा ''का अर्थ होता है ज्ञान का अधिष्ठाता अर्थात् जो ज्ञान एवं विज्ञान के क्षेत्र में निपुण हो।अभिप्रायानुसार मैं जो समाज में अग्रगण्य हो तथा उच्च कोटि को वक्ता हो । इस प्रकार नारी स्वयं विदुषी होकर संतान को सुशिक्षित बनाती है। ऋगवेद के सुक्त (10.159) मे इन्द्राणी का गौरव वर्णित है। वैदिक समय में महिलाओं को यज्ञ में भाग लेने का अधिकार दिया गया था। किसी भी समाज में नारियो की स्थिति और सम्मान उसके बौद्धिक एवं सांस्कृतिक प्रगति का परिचायक होता है। ऋगवेद में स्वयंवर प्रथा का उल्लेख है। जिसमे स्त्री को अपने इच्छानुसार पति वरण करने का अधिकार प्राप्त था। स्त्री सहस्त्र बल की अधिष्ठात्री थी तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाली शत्रु संहारक विजयिनी थी। वह अपने गुण एंव योग्यता के आधार पर आदरणीय एवं पूज्यनीय थी। शतपथ ब्रह्ममण में स्त्री को पुरुषों का आधा अंग कहा गया है, आर्थात नारी नर के आत्मा का आधा भाग है। नारी सहयोग के बिना नर का जीवन अधुरा है। क्या हम उन्ही पूर्वजों की संतान है जिसने वेदों में महिलाओं को उनके गुण, योग्यता, दक्षत्ता के आधार पर अधिकार और सम्मान प्रदान किया था। किंतु वर्तमान समय में नारी को दयनीय स्थिति हमें सोचने के लिए विवश करती है कि गरिमामयी नारी रूप का कितना अवमूल्यन हुआ है ।नारी को भोग की वस्तु समझ कर उसके अधिकार और सम्मान को पैरों तले रौंदा जाने लगा परिणाम स्वरुप बाल विवाह, पर्दा प्रथा ,कन्या भ्रूण हत्या, देवदासी प्रथा आदि कुप्रथाओं द्वारा महिलाओं पर अत्याचार किया जाने लगा इस सामाजिक कलंक ने नारियों की स्थिति अधिकार एवं सम्मान को गर्त में डाल दिया। नारी जो वैदिक युग में देवी थी धीरे–धीरे उनका अधिकार समाज द्वारा छीन लिया गया। मध्यकाल में जब सामंतवादी युग आया तब पुरुषों को समझ में श्रेष्ठ बताकर नारियों को मूल अधिकार से उन्हें वंचित कर दिया गया। पुरुषों ने नारियों को अपने अधीन रखकर उसे इतना ज्ञान हीन, शक्तिहीन एवं साहसहीन कर दिया की नारी अपनी आत्मरक्षा के लिए भी पुरुषों पर निर्भर हो गई।

समाज के ठेकेदारों तथा पुरोहितों ने मिलकर समाज में पुरुप प्रधान नियम बनाये जिसे विधि विधान का नाम दे दिया गया। यहीं से यह बात समाज में आयी कि पति परमेश्वर है. उनकी इच्छाओं का सदैव ध्यान रखना है, उनकी इच्छाओं के विरूद्ध कोई कार्य नहीं करना है, अपनी अभिलाषाओं का त्याग कर उनके लिए अपना सर्वस्व नियोछावर कर देना है। इसप्रकार त्याग, करुणा, दया, ममता, सेवा सभी गुणों से सम्पन्न होते हुए भी स्त्री एक भोग का पदार्थ बनकर रह गई। मध्यकाल में इसके अपवाद स्वरूप कुछ समृद्ध राजघराने के परिवार की महिलाएं घर पर शिक्षा ग्रहण किया करतीं थी। जिसमें नूरजहां जहांआरा तथा जेबुनिशा का नाम विशेष उल्लेखनीय है। आधुनिक काल में भी महिलाओं की स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी किंतु सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन के पश्चात भारतीय राजनीति के परिपेक्ष में कई अमूल भूत परिवर्तन हुए, जिसमें नारियों की स्थिति एवं शिक्षा पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया। इस कार्य में कुछ अंग्रेज अधिकारियों ने भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया राजा राममोहन राय के अथक प्रयासों के पश्चात सती प्रथा को अमानवीय प्रथा घोषित किया गया। ईश्वर चंद्र विद्यासागर के द्वारा विधवा प्रथा पर कुठाराघात किया गया। परिणाम स्वरुप विधवा पुनर्विवाह को कानूनी मान्यता प्रदान की गई इन कुप्रथाओं के दूर हो जाने से स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन मिला। बंगाल में ईश्वर चंद्र विद्यासागर द्वारा कई बालिका विद्यालय खोले गए। स्वर्णिम प्रयास हंटर कमीशन ,भारतीय शिक्षा आयोग द्वारा शिक्षिका के प्रशिक्षण का प्रबंध आयोजित किया गया। आयोग द्वारा स्त्री शिक्षा के संबंध में अनेक सुझाव प्रस्तुत किए गए। 19वीं शताब्दी के अंत तक भारत में कुल 12 कॉलेज 467 स्कूल तथा 5628 प्राइमरी स्कूल लड़कियों के लिए खोले गए।

शताब्दी के अंत तक धीरे–धीरे नारियां उच्च शिक्षा की ओर अग्रसर हो रही थी। 20 वीं शताब्दी के प्रारंभ में नारी शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया गया तथा माना गया कि सामाजिक जीवन के लिए स्त्री शिक्षा अति आवश्यक है। शिक्षक पर सबका अधिकार है और लड़की तथा लड़के में किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए। 1916 शैक्षणिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण वर्ष

माना जाता है क्योंकि इस समय कोई महत्वपूर्ण शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना हुई जिसमें दिल्ली के लेडी हार्डिंग कॉलेज तथा डीके कर्वे द्वारा स्थापित विश्वविद्यालय का नाम उल्लेखनीय है। इस समय मुस्लिम महिलाओं ने भी उसे शिक्षा में पदार्पण किया जो अब तक इससे वंचित थीं। कर्वे जी ने इस बात का अनुभव किया की नारी तथा पुरुष की शिक्षा उनके आदर्शों के अनुकूल होनी चाहिए। उच्च शिक्षा में प्रगति स्वरूप नारी शिक्षा में कला, कृषि, वाणिज्य आदि का भी समावेश हुआ। धनाभाव के कारण बालिकाओं के लिए अधिक पृथक कॉलेज नहीं खुल सके किंतु राजनीतिक आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने के कारण महिला स्वयं शिक्षा के महत्व को समझकर इस ओर अग्रसर हुई। नारियों की शिक्षा में सावित्रीबाई फुले ने अद्वितीय प्रयास किया उन्होंने सर्वप्रथम पुणे में 1948 में बालिका विद्यालय खोले तत्कालीन रूढ़िवादी समाज के समस्त दंशों को झेलती हुई सावित्रीबाई फुले ने नारी शिक्षा के क्षेत्र में अपना अहम योगदान दिया स्कूल जाने के क्रम में उन पर गोबर, कचरा तथा पत्थर से प्रहार किया जाता किंतु इन सारी समस्याओं के बावजूद हुए अपने कार्यों पर अडिग रही उन्होंने न केवल बालिकाओं को शिक्षा दी बल्कि उनके छात्रावास की भी व्यवस्था की ताकि लड़कियों की को सुविधा प्राप्त हो छात्रवृत्ति की शुरुआत उन्होंने बालिकाओं के लिए की दूर दराजजो से आती थी।

अखिल भारतीय नारी सम्मेलन में यह निर्णय लिया गया कि बालिकाओं के लिए एक ऐसा शिक्षण संस्थान खोला जाए जो पूर्ण रूप से भारतीय जीवन के आदर्शों के अनुकूल है। गृहविज्ञान तथा शिक्षिका प्रशिक्षण पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया गया। बात प्राथमिक शिक्षा की हो या उच्च शिक्षा की 1946–47 तक आते–आते अध्ययन करने वाली कुल छात्राओं की संख्या 41.56,742 हो गई। यह हमें ज्ञात है कि स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय महिलाओं की शिक्षा में बहुत प्रगति हुई किंतु फिर भी शिक्षण के क्षेत्र में वह पश्चात महिलाओ की बराबरी नहीं कर पाई। अपने अधिकारो के लिए समाज से संघर्ष करती रही है। जबकि पश्चात महिलाओं को ये अधिकार पहले मिल गये। इसका अर्थ कतई ये नहीं है कि उन्हें अपने समाज में पहले से पुरुषो के समान अधिकार प्राप्त था। उन्हें भी ये सम्मान और अधिकार संघर्ष के पश्चात ही प्राप्त हुये, फिर भी वे भारतीय महिलाओ की अपेक्षा इस क्षेत्र में काफी अग्रणीय मानी जाती है। छात्रवृति की शुरुआत उन्होंने बालिकाओं के लिए की तथा साथ– साथ दलित वंचित महिलाओं को भी शिक्षित करने का प्रयास किया। शिक्षा हो या महिला सशक्तिकरण हर क्षेत्र में उन्होंने महिलाओं के लिए अथक प्रयास किया। महिलाओं के अधिकार आत्मसम्मान, आत्मरक्षा के लिए उन्होंने अपना जीवन न्योच्छावर कर दिया। 1948–49 में विश्व विद्यालय शिक्षा आयोग ने नारीशिक्षा के संबंध में मत प्रकट करते हुये कहा नारी विचार तथा कार्य क्षेत्र में समानता प्रदर्शित कर चुकी है। उच्च शिक्षा में नारियों के लिए ललित कला, गृहविज्ञान अर्थशास्त्र में प्रशिक्षण आवश्यक है। परिणाम स्वरूप हाई स्कूल में गृहविज्ञान की शिक्षा अनिवार्य कर दी गई। और लड़कियों की शिक्षा. का ध्यान में रखते हुये अनेक कला केन्द्र खोले गये। स्वतंत्रता मिलने के 10 वर्ष के बाद माहिलाओं ने शिक्षण के प्रत्येक क्षेत्र में अपना पर्दापण किया। उस समय तक बालिकाओं की कुल संख्या 87,67 912 हो गई थी। नारी शिक्षा की समस्याओं और समाधान के लिए राष्ट्रीय सामति की नियुक्ति की गई जिन्होंने इन इन समस्याओ पर गंभीरतापूर्वक विचार किया। फिर भी महिलाओं द्वारा हर क्षेत्र मे कार्य करने का वातावरण नहीं बन पाया। अधिकतर महिलाएँ उच्च शिक्षा पाने के पश्चात् चिकित्सा एंव अध्यापन का कार्य किया करती थी। वैश्विक दृस्टिकोण से अगर हम देखे तो पूंजीवादी राष्ट्र जपान, अमेरिका इग्लैंड, जर्मनी के साथ–साथ सम्यवादी विचारधारा के देश जैसे रूस, रुमानिया, यूगोस्लाविया आदि भी नारीशिक्षा में बहुत आगे बढ़ गये थे। ये राष्ट्र भी नारी शिक्षा पर विशेष ध्यान दे रहे थे। शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में उपयुक्त योग्यता प्राप्त कर वहाँ की नारी अपने सुशिक्षित राष्ट्र समाप्य का नवनिर्माण कर रही है। वर्तमान राजनेताओं ने भी यह महसूस किया कि जबतक महिलाओं को समाज में समान अधिकार सम्मान नही दिया जाएगा तब तक देश की सर्वोन्नति संभव नहीं है आधी आबादी होने के कारण अगर वे आगे नहीं बढ़ी तो समाज का विकास प्रतिशत सदैव कम ही रहेगा । नारी शिक्षण की महत्वता को समझते हुये नारीयों के शिक्षण विशेष छूट प्रदान की गई। यह महसूस किया गया की नारी अशिक्षित होगी तो वह असुरक्षित होगी। वे अपने अधिकारों के प्रति सजग नहीं हो पाँएगी। इन समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित करते हुये नारी शिक्षण में महत्वपूर्ण प्रयास किए गए। क्योंकि यदि समाज को उन्नत बनाना है तो लड़कीयों की शिक्षा बहुतजरूरी है। चूंकि ऐसा कहा जाता है कि बच्ची की प्रथम गुरु माँ होती है। जब वे ज्ञान से परिपूर्ण होगी तो एक सभ्य और सुसंस्कृत संतान का निर्माण करेगी ।जो आगे चलकर राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान देगा। जिस समाज में नारी का सम्मान नहीं होता वहाँ उन्नति होना संभव नहीं है। नेपोलियन बोनापार्ट का कथन है कि ''यदि आप मुझे शिक्षित माताएँ दे तो मैं आपको एक समृद्ध राष्ट्र दे पाऊंगा। इस कथन से शिक्षित महिलाओं की श्रेष्ठता ज्ञात की जा सकती है। महिलाओं ने देश

के स्वर्णिम इतिहास के निमार्ण मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। जिसके लिए उनका शिक्षित होना अति अनिवार्य है। बीसवीं सदी के अंतिम दशक में समाज में आर्थिक समाजिक बदलाव आए तब नारी के लिए नौकरी और शिक्षा के अवसर प्राप्त हुये । प्रत्येक क्षेत्र मीडिया पत्रकारिता, कम्प्यूटर, सेना, डॉक्टर, विज्ञान, शिक्षण, वकील हर क्षेत्र में अपना परचम लहराया। नारियों ने अब स्वयं को पहचाना है। संविधान में मिले आधिकारी और आजादी के पश्चात् वे खुलकर अपने जीवन का प्रयोग कर रही है ।वह अब सम्पूर्ण औरत बनकर जीना चाहती है। वह अपने समस्त दायित्वों को पूरा करते हुये अपने–आप से परिचित हो रहीं है। एक माँ के रूप में वह परिवार की धुरी होती है। वह अपने बच्चों को अच्छे संस्कर और नैतिक मूल्य प्रदान करतीं है। वह बच्चो के लालन–पालन से लेकर व्यक्तित्व निर्माण में सहयोग करतीं है। पीढ़ी दर पीठी अपने संस्कारी परम्पराओं और नैतिक मूल्यों को पहुंचातीं है। वह परिवार और संस्कृति की संरक्षक तथा समाज की आधार शिला है। हर क्षेत्र में महिलाए शिक्षण के माध्यम से नित नये कीर्तिमान स्थापित कर रही है। महिलाएं श्रम शक्ति के रूप में भी कार्य रही है और श्रीजन शक्ति के रूप में भी अपनी योगदान राष्ट्र निर्माण में दे रहीं है। आज की नारी खुले आकाश में अपने सपनो के उड़ान को फलीभूत कर रही है। आज की नारी आगे बढ़ रही है किंतु क्या इतन पर्याप्त है। क्या उन्हें समाज में सारे–के सारे अधिकार पूर्णरुपेण प्राप्त हो चुका है। या स्थिति अभी भी बहुत बदलना आवश्यक है। उसके लिए ठोस कदम स्वंय नारीयों उठाने होगे।

नारी की स्थिति अभी भी समाज में पूर्णता स्वच्छंद नहीं है। समाज पुरुष सत्तात्मक होने के कारण वे अभी भी अपनी इच्छानुसार शिक्षण अथवा व्यवसाय का चयन नहीं कर पाती । कम पढ़ी लिखी एवं निम्न वर्ग की महिलाओं की स्थिति अति दयनीय है। मेरा उद्देश्य है कि सभी को अपने अधिकारी से परिचित किया जाय। मेरा उद्देश्य कतई यह र्दशाना नहीं है कि पुरुष वर्ग ने सिर्फ शोषनकर्ता के रूप में उनके अधिकारी का हनन किया है। क्योंकि जब नारी और पुरुष समान रूप से एक दूसरे के विचारों का आदर करते हैं तभी एक उन्नत समाज की कल्पना की जा सकती है। क्योंकि जब तक महिलाओं के गौरव की पुर्नप्राप्ति नहीं हो जाती तब तक भारतीय गौरव गरिमा का लौट पाना असंभव है। क्योकि नारी उदारता, ममता करुणा, शक्ति की प्रतिमूर्ति है। बात राष्ट्र निमर्माण की हो या समाज विकास की बात परिवार के यश की हो या कुल के प्रतिष्ठा की महिलाओं का योगदान सदैव सर्वोपरि रहा है।

मेरा इस सब को लिखने का मकसद यही है की नारी वैदिक काल में जिन गुणों ने संघन थी वह धीरे धीरे नारी के शायद बढते वर्चस्व ने पुरुष समाप्त करता चला गया... पर आाज की सारी बहुत आगे जा चुकी है और आगे जाना है उसको नारी की सिथ्ती अभी भी बहुत बदलना बाकी है... पर इसके लिए सिर्फ यहाँ लिखने से काम नहीं चलेगा.. उस के लिए कुछ ठोस कदम खुद ही नारी को उठाने होंगे अपने आस पास आंकना होगा... फिर चाहे वह कम पड़ी लिखी एक निम्न वर्ग की रवी हो या आपके घर में काम करने वाली बाई ऐसी एक भी स्त्री को हम उसके अधिकारों से परिचित करवा देते हैं तो समझ जाए की हमने आने बाले वक्त के परिवार को उन्नत समाज का रास्ता दिखा दिया है...हम सफर बन कर चले नारी और पुरुष दोनों समानता हो और एक दूसरे के विचारों का आदर तभी एक उत्रत समाज की कल्पना की जा सकती है।

संदर्भ सूची :

1. M. Bloomfield, The Religion of the Veda (1908, repr. 1973):
2. B. Keith, The Religion and Philosophy of the Vedas and Upanishads (1923, repr. 1976). M. Winternitz. History of Indian Literature (3 vol., tr. 1927-33).
3. R. C. Majumdar, The Vedic Age (1951, repr. 1957)
4. E. V. Arnold, The Rigveda (1960, repr 1972).
5. Jayaswal, K.R. Hindu Polity, Calcutio, 1924
6. Kunhan Raja, C., The Vedas, A Cultural Study. Andhra University. 1957.
7. Mira, Veda Education in Ancient India, Arya Book Depot. New Delhi. 1964.